'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ९० | वाराणसी, मंगलवार, ११ अगस्त, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

हुँदवारा (कश्मीर) २६-७-'५९

रहम, इन्साफ और ईमान से ही समाज का संतुलित विकास होगा

आज सुबह ११ बजे हमने भाइयों को बुलाया था, कुरान-शरीफ की किलावत करने के लिए। किलावत करनेवाले बहुत निकले और उस समय लोग भी बहुत आये थे। बहुत से लोग कुरान पढ़ना जानते थे और कुछ बेचारे नहीं भी जानते थे। इसलिए गलतियाँ भी कुछ होती थीं। लेकिन अल्ला तो "गफूसर रहीम्" कहलाता है। इसलिए वह तो मुआफ कर ही देगा। बच्चा जब ठीक नहीं बोलता है, तब उसकी टूटी-फूटी जबान माँ को प्यारी लगती है। उसी तरह से अल्ला को भी वह सारा प्यारा लगा होगा। मुझे बड़ी खुशी हुई कि बहुत लोगों ने इसमें हिस्सा लिया। ऐसा प्रोग्राम मैं इसलिए करना चाहता हूँ, ताकि मैं यहाँके भाइयों से वाकिफ हो जाऊँ।

सूरे-हसर

मैंने देखा, करीब १३-१४ शख्स होंगे, जिन्होंने किलावत की। सबसे पहले जिन्होंने किलावत की, उन्होंने 'सूरे-हसर' में से की। जबसे इस प्रकार किलावत करना शुरू किया है, तब से मैंने देखा कि हर मजलिस में 'सूरे-हसर' का जिक्र हुआ ही है। इस बातकी मुझे बेहद खुशी होती है। इससे यह जाहिर होता है कि कौनसी चीज लोगों के दिलों को प्यारी लगती है। पैगंबरों और नबियों ने दूसरी जगह नसीहतें दी हैं, वे सबकी भलाई के लिए ही दी हैं। इसलिए किसीकी कीमत कम, किसीकी ज्यादा, ऐसा तौल नहीं कर सकते हैं। कुछ बातें किसीके काम आती हैं तो कुछ बातें किसी दूसरे के काम आती हैं। इसका मानी यह है कि कुछ बातें मेरी गरज के लिए होती हैं और कुछ दूसरे की गरज के लिए होती हैं। कुछ ऐसी भी होती हैं, जो सबके काम की होती हैं और वे सबको प्रिय होती हैं, प्यारी होती हैं।

यह प्रोग्राम मैंने पूँच की तरफ से शुरू किया। वैसे इसके पहले भी—१० साल पहले—जब मैं हिंदुस्तान में मेवात में मुसलमानों को बसाने का काम करता था, तब भी किलावत का (कुरान गाने का) काम करता था। बहुत थोड़े प्रोग्राम ऐसे हुए, जिनमें 'सूरे-हसर' न गाया गया हो।

अल्ला के नाम

—'सूरे-हसर' में अल्ला का नाम बार-बार आता है। उसमें अल्ला की जितनी सिफतें (गुण) हैं, उतने ही नाम हैं। पर अल्ला की सिफतें गिनी नहीं जा सकतीं। उनकी गिनती हो ही नहीं सकती। उसके गुण, उसकी सिफत जबानपे भी नहीं ला सकते हैं। उनको हम नाप नहीं सकते हैं।

हिन्दू-धर्म में व्यासजी ने 'भागवत' नाम का ग्रन्थ लिखा है। उसमें 'विष्णुसहस्रनाम' आता है। याने भगवान के सहस्र नाम हैं। मुसलमानों ने अल्ला के ९९ नाम माने हैं। क्या वाकई में अल्ला के नाम ९९ तक ही महदूद (सीमित) हैं ? नहीं ! लेकिन ऐसी केवल गिनती मान रखी है। ऐसे 'सूरे-हसर' में अल्ला के नाम इकट्ठे किये हैं और वह फिक्रा लोगों को बहुत ही प्यारा है। इसलिए हर प्रोग्राम में कोई-न-कोई उसे गानेवाला निकल ही आता है। इससे यह साफ जाहिर होता है कि हिंदुस्तान के लोगों में अक्ल है। किस चीज की क्या कीमत है, इसे वे अच्छी तरह जानते हैं।

परमात्मा के नाम की अहमियत सब धर्मों में गायी गयी है। यह ठीक है कि बौद्ध धर्म में बुद्ध का याने एक महापुरुष का नाम गाया है। खैर ! लोग किसीका भी नाम लें। आखिर इन्सान को बचानेवाला है कौन ? यह पूछा जाय तो नाम ही है। इसके सिवा दूसरी चीज इन्सान के पास नहीं है, जो उसे खौफ से बचा सके। हर समय हम खुदा का नाम लें।

अल्ला की नियामतों का तराजू

अल्ला ने इन्सान को अक्ल और मुहब्बत दी है। अल्ला का यह फज्ल है। उसने जो नियामतें दी हैं, वे 'सूरे-हसर' में आती हैं। उसमें ऐसा कहा है कि कौन-सी ऐसी अल्ला की नियामत (देन) है, जो आप कबूल नहीं करते। उसमें अल्ला की नियामतें गिनी गयी हैं। अब उसकी गिनती तो नहीं हो सकती है, लेकिन कुछ फेहरिश्तें तो जरूर दी हैं। भाइयो, उसमें अल्ला की बहुत बड़ी देन, बक्षीस है, वह आती है सूरे-रहमान में।

अल्ला ने जो कुछ पैदा किया है, उसका जिक्र करते हुए यह कहा गया है कि अल्ला ने इन्सान को 'मिजान' याने तराजू दिया है, उसीके द्वारा वह ठीक-ठीक वजन, नाप, तौल करता है। अल्ला ने जो चीजें पैदा कीं, उनमें जमीन, आसमान, पहाड़, दरख्त, फूल, फल, अनाज आदि कई तरह की चीजों का नाम आता है और अजीब बात यह है कि उन चीजों में 'तराजू' का भी नाम आता है, 'मिजान !'

अल्ला ने आपको नसीहत दी है, नियामत दी है। उसका पूरा

फायदा उठाना हो तो आप तराजू जरा ठीक रखें। उसमें कम-बेसी न होने दें। मेरे प्यारे भाइयो, तराजू हमने अपने पास इसलिए रखा है कि न्याय में कभी भी फर्क न हो, न्याय ठीक-ठीक दे सकें। तराजू से भी बढ़कर कोई चीज हो सकती है! लेकिन तराजू इसलिए है कि जिंदगी में हम तौलकर काम करें। जीने के लिए हमें अच्छी चीज मिले, लेकिन हमारा नापना-तौलना कम न हो।

अल्ला की देन : रहम

सबसे बड़ी चीज अल्ला ने जो हमें दी है, वह है 'रहम'। अल्ला का नाम है 'अल्रहमान!' महम्मद पैगम्बर यह नाम लेता है। उसने यह कहा है कि दूसरे-तीसरे मरबूद नहीं हैं। अल्ला एक ही है। वही 'अल्रहमान' यह नाम भी लेता है। कुरान-शरीफ में आता है कि एक दिन मीटिंग में एक शख्स ने महम्मद पैगंबर को पूछा कि "आप कभी 'रहमान' कहते हैं, कभी 'अल्ला' कहते हैं। क्या ये दो अलग-अलग शख्स हैं? और आप तो कहते हैं कि इबादत के लायक एक ही है।" इस समय पैगम्बर ने जवाब में कहा "अरे, जो अल्ला है, वही रहमान है और जो रहमान है, वही अल्ला है।"

अल्ला का सबसे बड़ा नाम है 'रहमान'। याने रहम करनेवाला। अगर अल्ला हमपर रहम करता है तो हमारा फर्ज क्या है? अल्ला ने हमें 'तराजू' दिया है, इसलिए जितना उसने दिया, उतना ही वापस हम करेंगे, यह तो कम-से-कम बात हुई। अगर इससे भी कम मैं करूँ तो मैं इन्सानियत से भी नीचे गिर जाऊँ। लेकिन अल्ला ने हमारे सामने एक मिसाल रखी है। आप जितना देते हैं, उससे ज्यादा ही वह आपको देता है। आपके सामने किसान की मिसाल है। किसान एक दाना बोता है, लेकिन वापस कितना पाता है? यह जाहिर है कि बनिये की तरह अल्ला तौलकर नहीं देता। वह एक के बदले एक नहीं देता। वह ऐसा नहीं करता कि आपने मुझे एक दाना दिया है, इसलिए मैं भी आपको वह एक दाना ही वापस करता हूँ और सूद के तौर पर और एक, इस प्रकार दो बीज देता हूँ। वह तो एक के बदले सौ देता है। आपके प्यार के बदले में भर-भर के देता है, खूब-खूब देता है।

कुरानशरीफ में एक जगह आया है कि "कोई शख्स अच्छा काम करेगा तो अल्ला उसे दसगुना देगा और अगर बुरा काम करेगा तो उसे उतना ही देगा।" इससे मिजान कहाँ रह गया? वह तो उसका इस्तेमाल ही नहीं करेगा। जहाँ बुरा काम किया गया, वहाँ वह उतना ही देगा और जहाँ अच्छा काम किया, वहाँ वह दसगुना देगा। याने प्यार बरसाने के लिए वह तैयार बैठा है। आखिर में अल्ला की हमारे लिए सबसे बड़ी मिसाल है, वह है 'रहम'। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, क्या उस रहम का भी वजन अपनी जिन्दगी में रहा है? वह तराजू में नहीं रहा है। जितना दिया, उससे ज्यादा पाने की नियत है। एक सेर पाया तो पौन सेर लौटाने की नियत है।

देने-लेने का गणित

लोग तो अल्ला को भी ठगना चाहते हैं। वह १ बीज के बदले १०० देता है। ये लोग उसे कहते हैं कि "हम जब १ देते हैं, तब तू १०० देता है। तो हम कुछ भी नहीं दें, सिफर दें तो तुम हमें ९९ दो।" अल्ला कहता है "तुम मुझे बेवकूफ मत बनाओ। प्यार की अलामत (निशानी) तुम्हें मिलनी चाहिए, इसलिए मैं तुम्हें १०० गुना देता हूँ। यह ध्यान रखो कि १ का १०० गुना १०० होता है। लेकिन सिफर का १०० गुना भी सिफर ही होता है। ०+१००=०, १+१००=१०० होता है—यह बात है। ऐसी दया, रहम अल्ला ने सबपर चलायी। कोई अच्छा काम करेगा तो अल्ला खूब देगा। बाप अपने बेटे के थोड़े-से काम की तारीफ, कोई मेहमान आये तो उसके पास करता है। माँ-बाप का यह दिल कुदरत के पास है। वह इन्सान को भर-भर के देती है। यहाँ जितनी खूबसूरत कुदरत है, उतना ही बदसूरत इन्सान है। हम लोरेन गाँव में गये थे। वहाँसे पीर-पंजाल का पहाड़ लांघकर यहाँ आये। लोरेन में बड़ा ही सुन्दर नजारा देखने को मिला। आँखों के लिए सुकून, आँखों के लिए भोजन वहाँ मिलता है। लेकिन हमने देखा, जहाँ ज्यादा से ज्यादा खूबसूरत जगह है, वहाँ इन्सान ज्यादा-से-ज्यादा बदसूरत हैं। आपके जितने ब्यूटी स्पॉट्स हैं, उतने डर्टी स्पॉट्स हैं। वहाँ गुर्बत (गरीबी) भी खूब देखी। गरीबों की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

बिना भेद-भाव की सेवा

पीर-पंजाल के उस पार मंडी-राजपुरा में हम छह दिन रुके थे। सैलाब के कारण वहाँ रुकना पड़ा था। लैन्ड-स्लाइड के कारण एक मकान गिर गया। उसके नीचे सात शख्स मर गये। आठवाँ जिन्दा निकला, बाकी सारे मर गये। हमारे साथियों ने वहाँ जाकर खोदा। उन लाशों को निकालना, दफनाना आदि कुल का कुल काम हमारे साथियों ने किया। मुसलमानों को दफनाने का काम हिन्दुओं ने किया। एक जो जिन्दा लड़का निकला था, उसकी भी तीन दिन तक खिदमत की, पर वह तीसरे दिन मर गया। यह सारा वहाँ हुआ। हम कुछ न कुछ कर सके तो दुनियाभर में खबर पहुँची। हम वहाँ रुके, इसलिए दुनिया का ध्यान उस तरफ था। अब बाबा का क्या होगा? जिनकी फिक्र नहीं की जाती, उनकी फिक्र करनी चाहिए। बाबा की फिक्र तो सभी करते हैं। वहाँ मजदूर कहते थे "आप हमें पैसा न दीजिये, अनाज दीजिये।" ऐसी गुर्बत वहाँ है। अब इस सैलाब की वजह से आफत आयी, यह अलग बात है। फिर भी वहाँ बहुत गुर्बत है। उधर गुलमर्ग में दुनियाभर के लोग देखने आते हैं। इतनी सुन्दर कुदरत वहाँ है, लेकिन वहाँ जो मजदूर हैं, उनकी हालत बहुत ही खराब है। अचरज की बात है कि जहाँ इतनी खूबसूरत कुदरत हो, वहाँका इन्सान इतना संगदिल! इतना तंगदिल!!

कुरान शरीफ में आता है—तेरा दिल पत्थर जैसा है। यह ठीक है कि यह बाद में कहा है, लेकिन ऐसा कहना भी गलत है। क्योंकि दूसरे ऐसे कितने ही कीमती पत्थर होते हैं, उनसे तेरा दिल ज्यादा सख्त है। मजेदार फिका है। आश्चर्य है कि हमारा दिल इतना सख्त बन गया है।

प्यार को बहने दीजिये

अल्ला की क्या करामात है? उसने मनसूबा किया और हरएक को प्यार की तालीम बचपन से ही दी है। सरकार अक्ल की तालीम देती है। लेकिन मुहब्बत और प्यार की तालीम हर बच्चे को मिले—ऐसी तजबीज अल्ला ने की है। हरएक बच्चा माँ की गोद में जन्म लेता है, चाहे वह अमीर हो या गरीब। प्यार और मुहब्बत की तालीम—इतनी बड़ी तालीम अल्ला ने उसे दे रखी है। हम प्यार से जनमते हैं, प्यार से ही बढ़ते हैं। इतना सारा प्यार अन्दर, बाहर, ऊपर, नीचे, आगे, पीछे मिलता है। फिर भी हम कैसे सख्त बन जाते हैं! घर में प्यार करते हैं और पड़ोसी के प्रति पत्थर दिल बनते हैं।

इस तरह प्यार को हमने घर में महदूद किया है, कैदी बनाया है। प्यार को बहने नहीं दिया है। पानी को बहने नहीं दिया तो पानी गन्दा बन जाता है। उसमें कीड़े पड़ते हैं। वैसे ही घर में 'मेरी बीवी', 'मेरे बच्चे'—या बाकी और जो हैं—गाँव में वे 'मेरे नहीं', ऐसा हो जाता है। बहने न देने से पानी की जो हालत हो जाती है, वही प्यार की होती है। उसे फिर प्यार का रूप नहीं रहता। जैसे वह पानी पीने लायक नहीं रहता, गन्दा हो जाता है, वैसे ही जो प्यार सिर्फ घर में रहता है, वह प्यार नहीं रहता, वह शहवत, हवस बन जाती है।

कुरान में एक जगह आया है—"न हन् नफ्स। अनिल हवा।" बड़े-बड़े नबी, बड़े-बड़े सन्त—सभीने प्यार किया है और खिदमत की है। प्यार गंगा का पानी है। वह भी खिदमत करता है। उनमें प्यार था, इसलिए उन्होंने दुनिया की खिदमत की। लेकिन प्यार को रोका जाय तो जिन्दगी बरबाद होगी, बिगड़ जायगी।

दौलत को रोकिये नहीं

हम अपना आलीशान मकान बनाते हैं, परन्तु आसपास झोपड़े भी होते हैं। हमारे लिए, जिन्दगी के लिए सारा सामान मुहैया है, किन्तु झोपड़े वाले भूखे हैं। उनसे कोई खतरा न हो, इसलिए हथियार लेकर रक्षा के लिए, बचाव के लिए सन्तरी खड़े करते हैं। इस तरह हमारा अपना घर भरा है। कबीर का एक शेर है—

"पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥"

किश्ती में पानी भरा, यह खुशखबरी नहीं है, डर है। इसलिए उसे दोनों हाथों से उलेचना चाहिए। जिस घर में पैसा भर गया, उस घर की हालत उस किश्ती जैसी हो गयी। पानी चाहिए, पर किश्ती के बाहर, नीचे, अन्दर नहीं। वैसे ही पैसा, धन, दौलत चाहिए जरूर, पर घर में नहीं, घर के बाहर, समाज में। दौलत को घर में कैद कर रखें तो खतरा है। दौलत इस हाथ से उस हाथ में जानी चाहिए। जैसे फुटबॉल का खेल होता है। अगर मैं गेंद न फेकूँ, अपने ही हाथ में लिये रहूँ, खुदगर्ज बनूँ तो खेल खत्म हो जायगा। जहाँ गेंद हाथ में आया, वहाँ उसे फौरन लात मारकर आपके पास भेज दिया। वैसे ही दौलत एक के हाथ से दूसरे के हाथ में—समाज में बहती रहनी चाहिए, दौड़ती रहनी चाहिए, फैलती रहनी चाहिए। ऐसा करने से ही समाज की जिन्दगी अच्छी, खुशहाल बनती है।

क्या बहनें बैंक हैं?

हमने क्या किया है? बहनों के कान में, नाक में अल्ला ने छेद नहीं बनाया, पर हमने बनाया। वैसे ही मोती में भी छेद नहीं था, वह भी हमने बनाया। उसके अन्दर सोने का धागा पिरोया और कान तथा नाक में लटका दिया। हमने कई बार कहा है कि गहनों ने बहनों को दबाया है। गुलाम बनाया है। कान में बेड़ी, नाक में बेड़ी, हाथ में बेड़ी, पाँव में बेड़ी। ऐसी बेड़ी से ही बहनें डरपोक बनती हैं। वे सारी हमारी बैंक बनती हैं तो दूसरे की नजर उनपर जाती है।

देना धर्म है!

रेल की मुसाफिरी में हमारे खाने पर किसीकी नजर न जाय, इसलिए हम पीठ फेर लेते हैं और खाना खाते हैं; क्योंकि दूसरे की नजर हमारे खाने पर पड़ी तो खाना हजम नहीं होगा। यह कोई वजह है? क्या माँ खानेको बैठती है तो बच्चेकी नजर उसपर पड़ती है? नहीं; क्योंकि वह बच्चे को पहले खिलाकर बाद में खुद खाती है। माँ बच्चे को दिये बिना नहीं खाती। हम दूसरे को न दें, और खुद मेवा, मिठाई खायें तो ऐसी हालत में हमारे खाने पर उसकी नजर पड़ती है। तब वह खाना हमें हजम नहीं होता। इसलिए बड़ी बात तो यह है कि खुद खाने के पहले समाज के लिए कुछ न कुछ देना चाहिए। देकर ही खाना चाहिए—आपके पास कुछ भी नहीं, सिर्फ एक रोटी है। उसकी आपको जरूरत है, यह माना, पर जो एक है, उसका भी एक हिस्सा, थोड़ा सा टुकड़ा पहले दूसरे को दो, फिर खुद खाओ। गरीबों को भी देना लाजिमी है, सभी को कुछ न कुछ जरूर ही देना चाहिए। दिये बिना नहीं रहना चाहिए।

कुरानशरीफ में आता है—"व यू अतु ज़् ज़कात" जकात देनी चाहिए "मिम्मा रजकना हुम युन फिकून।" जो भी थोड़ा है, उसीमें से देना चाहिए। देना धर्म है। धर्म सबपर लागू होता है, इसलिए गरीबों को भी देना चाहिए। जो भी थोड़ा मिलता है, उसीमें से पेट काटकर देना चाहिए। देने का यह फर्ज हरएक को अदा करना चाहिए। किसान क्या करता है? फसल आयी तो उसमें से अच्छे से अच्छा, उत्तम से उत्तम बीज निकालकर रखता है—बोने के लिए। क्योंकि दिये बगैर खाना नहीं चाहिए। इसलिए थोड़ा गल्ला हो तो भी उसमें से किसान बोने के लिए निकालकर रखता है। खाने को कम हो तो भी वह नहीं खाता। यह एक तरह से उसकी कुर्बानी है। इसलिए भगवान खुश होते हैं और दस गुना देते हैं। किसान पेट काटकर, बोने के लिए अच्छा बीज निकालकर रख देते हैं। इसलिए हम भी अपना फर्ज अदा करें और रहम करें। इन्साफ रखें। अगर हम इन्साफ भी न करें तो इन्सान गिरेगा। इसलिए 'मिज़ान' रखें, 'तराजू' रखें। इन्साफ दें और ज्यादा रहम करें। आज रहम की सख्त जरूरत है।

आठ साल लगातार यही बात दुहराते हुए हम चले हैं। फिर जैसा सुननेवाला मिलता है, वैसा सुनाते हैं। अभी कुरान को माननेवाले मिलते हैं तो कुरान के नाम से अपनी बात रखते हैं। वेद के नाम से चलनेवाले मिलते हैं तो वेद के नाम से रखते हैं। बाइबिल के नाम से चलनेवाले मिले तो बाइबिल के नाम से रखते हैं। जन्नत में हमारे लिए सीट रिजर्व हो, इस खयाल से कोई कुरान पढ़ता हो तो उसका कुरान पढ़ना बेकार है, अगर उसमें रहम नहीं है।

ईमान के साथ अमल हो

"जो ईमान रखते हैं वे नेक अमल भी करें।" इसका माने यह है कि ईमान की कसौटी अमल ही हो। इसलिए किलावत करेंगे और जन्नत में जायेंगे—ऐसा मानना गलत है। संस्कृत में कहावत है—श्रुतं हरति पापानि—सुन लिया और पाप मिट गये। लेकिन सुनने भर से पाप खत्म नहीं होते। उसके लिए तो अमल करना चाहिए। अल्ला से हमने भर-भर के रहम पायी है। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि हम भी इन्साफ करें, रहम करें। यह सूझ सूझती है अल्ला का नाम लेने से ही। इसलिए 'सूरे-हसर' की किलावत करते हैं। अल्ला 'अल्हक' है तो हमें भी सचाई से चलना चाहिए। वह 'अल् रहमान' है तो हमें भी रहम करना चाहिए। जो-जो गुण, जो-जो नाम अल्ला के हम गायें, उनका अमल हमें हमारी अपनी जिन्दगी में भी करना है। हमें उन सिफतों (गुणों) को अपनी जिन्दगी में लाना चाहिए। उसकी रहम गैरहिसाब है। हमारी छोटी कूवत है।

लेकिन हम जो अल्ला का नाम ले रहे हैं, इसका अमल जिन्दगी में करना चाहिए। आज के किलावत से हमें बड़ी खुशी हुई। 'सूरे-हसर' ! अल्ला का नाम लिया करो। ऐसा करने से इन्सान जरूर ऊपर उठता है।

आखिरी क्षण के लिए

मेरे लिए कश्मीर, पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाड में कोई फर्क नहीं है। वैसे इस शरीर ने जन्म लिया है बाँबे-स्टेट में। लेकिन मौत कहाँ होगी, मालूम नहीं, पता नहीं। हमारे मन में क्या है ? अगर हमारी मौत यहाँ हो तो हमारी हड्डी यहीं गिर जाय। जिस जमीन पर जिस्म गिरेगा, वही जमीन इसके लायक थी, ऐसा माना जायगा। जहाँ हम जन्मे, जहाँ पैदा हुए, वह जमीन हमारी नहीं, बल्कि जहाँ जिस्म गिरे, वह जमीन हमारी होगी। इसलिए कश्मीर पर हमारा वही प्यार है, जो हमारी जन्मभूमि पर है।

आखिरी लमहा (क्षण) अच्छा हो, इसलिए हाथ से नेक काम होना चाहिए। आखिरी क्षण हम अल्ला का जिक्र करते रहेंगे, उसका नाम लेते रहेंगे तो हमने पा लिया। नहीं तो हमने जिंदगी भर सब कुछ किया, लेकिन सब खो दिया। वह आखिरी क्षण, लमहा अच्छा हो, इसलिए यह कोशिश हो रही है। जिंदगी-भर हमने बहुत त्याग किया, तकलीफ उठायी, पर आखिरी क्षण में उसे याद न कर सके तो हमने सब खोया।

रोते आये, हँसते जायँ

जब तू इस दुनिया में आया, तब रोते-रोते आया। तू रोता था, लोग हँसते थे। जब तू जायेगा, तब हसता रहेगा और लोग रोते रहेंगे। ऐसा होना चाहिए। "सब का प्यारा था"—ऐसा लोग कहें तो जानेवाला हँसते-हँसते जाय। मैंने 'मेरा' 'मेरा' नहीं किया। भगवान ने जो चोला पहनाया था, वह उसके बंदों की खिदमत के लिए था। मैंने खिदमत की। अब जा रहा हूँ तो हँसते-हँसते—ऐसा होगा, तभी तो कुछ कमाया, ऐसा कहा जायगा। नहीं तो यह खेत, यह दौलत—क्या कोई कमाई है ? नहीं ! इसलिए यहाँ हैं, तब तक खिदमत करेंगे। ऐसा करेंगे, तभी अल्ला फज्ल करेगा।

◆◆◆

शान्ति-सेना की प्रगति के सम्बन्ध में एक दृष्टि

[शान्ति-सैनिक और शान्ति-सहायक की निष्ठाओं के बारे में तथा शान्ति-सेना के संगठन और व्यवस्था के बारे में विनोबाजी की दृष्टि क्या है, यह निम्नोक्त प्रश्नोत्तरों से समझने में हमें काफी मदद मिलती है। ये प्रश्नोत्तर श्री कृष्णराज मेहता को दिये गये विनोबाजी के एक पत्र से संकलित किये गये हैं।—सं०]

लोकसेवक और पक्षमुक्ति

प्रश्न : शांति-सैनिक और लोक-सेवक का पाँच निष्ठाओं में साम्य है, फिर पक्षातीत व्यक्ति लोक-सेवक क्यों नहीं हो सकता ?

उत्तर : शांति-सैनिक लोक-सेवक ही होगा। लोक-सेवक की पाँच निष्ठाओं के अलावा शांति-सैनिक की एक और छठी निष्ठा होगी। लोगों ने माना है कि शान्ति-सैनिक लोक-सेवक से कुछ कम होगा, यह गलत है। पक्षों में रहकर भी पक्षातीत वृत्ति से काम करनेवाले अपवादस्वरूप ही होंगे। पक्ष में रहकर पक्षातीत रहना याने गीता का कर्मयोग ही है। इसलिए ऐसे लोग बिलकुल ही थोड़े होंगे, उन्हें स्पेशियल केस के तौर पर शांति-सैनिक माना जायगा। ऐसे शांति-सैनिक अपवाद ही होंगे। शांति-सैनिक के लिए पक्षमुक्त रहना आवश्यक है। आज के जमाने में पक्ष में रहना एक डिस्एबिलिटी (अपात्रता) है, इसलिए जाति, धर्म, पंथ आदि से मुक्त रहने की जितनी आवश्यकता है, उतनी ही पक्षमुक्ति की भी है।

"शांति-सहायक" भी पक्षमुक्त ही होने चाहिए। वे घंटा-दो-घंटा समय देनेवाले होंगे। पक्षमुक्ति के बिना कोई भी शांति-सेना का काम कर ही नहीं सकेगा।

"शांति-सैनिक" भूदान-मूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रांति के लिए पूरा समय देनेवाला होगा। खादी कार्यकर्ता शांति-सैनिक बन सकते हैं।

शांति-सैनिक कौन बने ?

प्रश्न : क्या ऑनेस्ट लिवलीहुड प्राप्त करनेवाले शांति-सैनिक बन सकते हैं ?

उत्तर : दुनिया में जितने मजदूर किसान हैं, वे सब ऑनेस्ट ही हैं। लेकिन वे अपनी रोजी हासिल करने के लिए दिनभर काम करते हैं तो फिर दूसरे काम के लिए समय बचता ही नहीं। शांति-सैनिक काम करने के लिए मुक्त ही होना चाहिए। इसीलिए मैंने कहा कि शांति-सैनिक शरीर-परिश्रम करें, लेकिन अपने खेत में नहीं, दूसरों के खेतों में करें।

संगठन और व्यवस्था

प्रश्न : शांति-सैनिकों के निष्ठा-पत्र कहाँ रखे जायँ ? संगठन व कार्यालय-व्यवस्था आदि कैसी हो ?

उत्तर : शांति-सैनिकों के निष्ठा-पत्र प्रांतीय दफ्तर में रहें और उनकी एक प्रतिलिपि अखिल भारतीय शांति-सेना-कार्यालय के पास भेजी जाय। जिले में शांति-सेना का अलग दफ्तर बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। शांति-सेना के लिए प्रान्त ही यूनिट माना जाय। लेकिन किसी जिले में हजारों शांति-सैनिक हों तो वे सैनिक अपने जिले के लिए संगठन बना सकते हैं। शांति-सेना के प्रांतीय दफ्तर आदि के बारे में जिला-सर्वोदय-मंडल के प्रतिनिधि मिलकर सोचेंगे। इन सब बातों पर सर्व-सेवा-संघ सोचे।

संगठन, व्यवस्था आदि के बारे में सर्व-सेवा-संघ चाहे जो तय करे, इसमें मेरी तरफ से खास कुछ सुझाव नहीं है। ◆◆◆

अनुक्रम

१. रहम, इन्साफ और ईमान से ही समाज का.....
हुंदवारा. २६ जुलाई '५९ पृष्ठ ५८१
२. शान्ति-सेना के सम्बन्ध में एक दृष्टि.
पृष्ठ ५८४

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी